तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए विश्वविद्यालय के कुलाधिपति और प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

दिनांक : 13 जनवरी, 2025। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर आरोग्य धाम अन्तर्गत गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (आयुर्वेद कॉलेज) के पंचकर्मा सभागार में आयुर्वेद –योग–नाथपंथ–2025 त्र अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय दिवस पर देश विदेश से आए गणमान्य प्रतिनीधियों को संबोधित करते हुए विश्व विद्यालय के कुलाधिपति और प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारत की सभ्यता और संस्कृति की चर्चा जब होती है तो ये बहुत प्रचीन है। यहां के ऋषियों ने इसमें अमूल्य योगदान दिया है। विश्व को चार संहिता लिपिबद्ध कर प्रदान करने वाले विद्वान भारत के ही महर्षि वेदव्यास थे। यह गुरु शिष्य परंपरा के द्वारा प्रदान किया था। जिस ज्ञान शृंखला को महर्षि वाल्मीकि ने आरंभ किया था उसे ही महर्षि ने वेदव्यास ने आगे बढ़ाया था। इनकी चर्चा इसलिए ये चार से पांच हजार वर्ष पहले इन्होंने ये कार्य किया था। जब हम मुक्ति की बात करते हैं तो श्रीमद् भागवत की कथा श्रवण किया जाता है मुक्ति या मोक्ष का तात्पर्य सफलता की आखिरी ऊंचाई को प्राप्त करना है। महाभारत प्रबंध कार्य ग्रंथ है। जिस ऋषि की नेतृत्व में ये सारा कार्य हो रहा था उन्होंने ने दोनों हाथ उठा कर कहा था कि धर्म का मार्ग ही श्रेष्ठ है। भारत ने धर्म को एक विराट स्वरूप में लिया है यह मात्र उपासना विधि नहीं जीवनशैली की समग्र दृष्टि है। कर्तव्य, सदाचार और नैतिक मूल्यों को ही धर्म माना है। हम दुराचारियों और पतित लोगों को धर्म के लिए संकट मानते हैं। इसका उद्देश्य धर्म अर्थ काम मोक्ष को प्राप्त करना है यह सभी स्वस्थ शरीर से ही प्राप्त कर सकते हैं क्यों कि शरीर एक साधन है। आयुर्वेद का मूल उद्देश्य शरीर को स्वस्थ रखना है। शरीर पंचमहाभूतों से बना है और महायोगी गोरक्षनाथ ने भी यही कहा कि पिंड में ब्रह्माण्ड समाया। पंचभूतों से जुड़ी सृष्टि को ही शरीर में देखना। यही आयुर्वेद का भी कथन है कि पंचमहाभौतिक स्वरूप वात, पित्त कफ को सम रखना। यदि इसमें विकृति आती है तो शरीर अस्वस्थ होता है। पंचकर्म चिकित्सा में इन्हीं विकृतियों का शमन करना है और यही हठयोग में बताए गए षट्कर्म के द्वारा किया जाता है। सर्वश्रेष्ठ लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए गुरु कृपा, स्वयं का प्रयास और औषधियों का भी अद्भुत योगदान है। लेकिन कालान्तर में भारतीय हीन भावना से ग्रस्त हो गए और यह मानस में प्रवेश कराया गया जो बाहरी ज्ञान है वो श्रेष्ठ है। ऐसे मानसिक विकारों से हमारी बहुत बौद्धिक क्षति हुई है। आज हम देखते हैं कि माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में हम पुनः भारत के उस विराट बौद्धिक ज्ञान परंपरा को, चिकित्सा परंपरा को जीवित कर रहे हैं। योग और आयुर्वेद ने दोनों ने यम, नियम और संयम को स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य माना है। योग का क्रियात्मक पक्ष नाथ योगियों के द्वारा दिया गया है। बहुत सारे आसन नाथ योगियों के द्वारा दिया गया है जिनके नाम नाथ योगियों के नाम पर है। शरीर के

अन्दर छः नाड़ियों में से हम मात्र दो नाड़ियों सुषुम्ना और पिंगला को जानते हैं लेकिन नाथ योगियों ने बाकी चार को भी साधना के द्वारा गुरु परंपरा से जाना है। चेतन मन के साथ–साथ हमें अवचेतन मन को भी जानने का प्रयास करना चाहिए यह यौगिक साधना के द्वारा हम जान सकते हैं। नाथ योगियों का ज्ञान, योग और आयुर्वेद तीनों का मानना है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के तत्व इस काया में है और इसे जानकर हम स्वास्थ्य के मार्ग पर बढ़ सकते हैं। यह अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी निश्चित ही एक भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति एक वैश्विक दृष्टि प्रदान करेगा।

कार्यक्रम का संचालन डॉ जितेन्द्र ने किया। डॉ. आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम ने माननीय मुख्यमंत्री, मुख्य वक्ता, देश विदेश से आए गणमान्य प्रतिनीधियों, सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

इजरायल प्रतिनिधि डॉ. गाई लेविन, एंट लेविन, श्रीलंका से डॉ. विरांथा, मायाराम उनियाल उडुपी से तन्मय गोस्वामी, यू. के. से डॉ. वी. एन. जोशी कार्यक्रम में माननीय कुलपति डॉ. सुरिंदर सिंह, कुलसचिव डॉ. प्रदीप राव, आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गिरिधर वेदांतम और डॉ. दीपू मनोहर, डॉ. विनम्र शर्मा, डॉ. साध्वी नन्दन पाण्डेय, डॉ. देवी और डॉ. प्रिया और विभिन्न देशों से आए प्रतिनिधियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।